जवाहरलाल नेहरु कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर
सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग

प्रेषक : *भोगल*
सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकारी

क्रमांक 118
दिनांक 29.09.2021

जनेकृविवि डेढ़ दशक से बीज उत्पादन के क्षेत्र में देश में अव्वल
भारतीय बीज विज्ञान संस्थान उप्र के निदेशक डॉ. संजय कुमार का जनेकृविवि दौरा : कृषि वैज्ञानिकों की सराहना की

जबलपुर 29 सितम्बर। जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक प्रजनक बीज के उत्पादन के क्षेत्र में राष्ट्रीय स्तर पर प्रथम स्थान को बरकरार रखने हेतु निरन्तर अनुसंधान के साथ ही उत्तम एवं उत्कृष्ट क्वालिटी के बीज उत्पादन का कार्य कर रहे हैं। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के भारतीय बीज विज्ञान संस्थान मऊ (उप्र) के निदेशक डॉ. संजय कुमार का आगमन हुआ। उन्होंने जनेकृविवि के ऑल इंडिया कोऑर्डिनेटड रिसर्च प्रोजेक्ट, राष्ट्रीय बीज कार्यक्रम, खरीफ मौसम हेतु प्रजनक कार्यक्रम का प्रबंधन, धान की ब्रीडिंग कार्यक्रम, धान–सोयाबीन का प्रबंधन, अनुसंधान के विभिन्न प्रयोग, मेगा सीड प्रोसेसिंग परियोजना, सीड़ प्रोसेसिंग यूनिट एवं विवि के बीज तकनीकी केन्द्र, जवाहर जैव उर्वरक उत्पादन केन्द्र का भ्रमण एवं अवलोकन किया। किसानों की उन्नति उत्थान एवं प्रगति हेतु कृषि वैज्ञानिकों द्वारा किये जा रहे विभिन्न अनुसंधान कार्यो की भूरि–भूरि प्रशंसा की। उन्होंने कहा किसान और राष्ट्रहित में जनेकृविवि के वैज्ञानिक बहुत उत्कृष्ट अनुसंधान कार्य कर रहे हैं, जिसकी सराहना देशभर में हुई है।

कुलपति डॉ. प्रदीप कुमार बिसेन ने उन्हें शाल, श्रीफल एवं प्रतीक चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया। इस मौके पर अधिष्ठाता कृषि संकाय डॉ. धीरेन्द्र खरे, संचालक अनुसंधान सेवायें डॉ. जी.के. कोतू, संचालक विस्तार सेवायें डॉ. डी.पी. शर्मा, संचालक शिक्षण डॉ. अभिषेक शुक्ला, अधिष्ठाता कृषि महाविद्यालय डॉ. शरद तिवारी, जवाहर जैव उर्वरक उत्पादन केन्द्र प्रभारी डॉ. एन.जी. मित्रा, प्रधान वैज्ञानिक डॉ. आर.एस. शुक्ला, डॉ. संजय सिंह, डॉ. रामकृष्णन, डॉ. आशीष गुप्ता उपस्थित रहे। निदेशक डॉ. संजय कुमार द्वारा कृषि विज्ञान केन्द्र नरसिंहपुर जिले में सोयाबीन बीज उत्पादन कार्यक्रम एवं बीज उत्पादन कार्यक्रम में किसानों के खेतों पर किये जा रहे विभिन्न अनुसंधान कार्यो एवं उन्नतशील किसानों के खेतों का भ्रमण किया। कृषकों द्वारा किये गए कार्यो की सराहना करते हुये कहा कि हमारे अन्नदाता किसान यदि उत्पादन का कार्य स्वयं करने लगें तो उन्हें कृषि का सबसे महत्वपूर्ण आदान प्राप्त करने एवं खेती करने में आसानी होगी।

–000–